कक्षा–12 NCERT राजनीति विज्ञान (स्वतंत्र भारत में राजनीति)

अध्याय–03 (नियोजित विकास की राजनीति) नोट्स

Youtube Channel Name : Siddhi Vinayak Sangaria

Channel Link- https://www.youtube.com/channel/UCJlUDM0uPIL7kEO0ZMdDcHg

Telegram link - https://t.me/siddhivinayaksangariamukesh (Siddhi Vinayak Sangaria)

Political Science Video Playlist Link-

https://www.youtube.com/watch?v=T1_JmzbsaAM&list=PLIlq5TfwxGWF7iVqpMJgSuc6OVr8kERaU

प्रश्न 1. 'बॉम्बे प्लान' के बारे में निम्नलिखित में कौनसा बयान सही नहीं है?

(क) यह भारत के आर्थिक भविष्य का एक ब्लू–प्रिंट था।

(ख) इसमें उद्योगों के ऊपर राज्य के स्वामित्व का समर्थन किया गया था।

(ग) इसकी रचना कुछ अग्रणी उद्योगपतियों ने की थी।

(घ) इसमें नियोजन के विचार का पुरजोर समर्थन किया गया था।

प्रश्न 2. भारत ने शुरूआती दौर में विकास की जो नीति अपनाई उसमें निम्नलिखित में से कौनसा विचार शामिल नहीं था?

(क) नियोजन

(ख) उदारीकरण

(ग) सहकारी खेती

(घ) आत्मनिर्भरता।

प्रश्न 3. भारत में नियोजित अर्थव्यवस्था चलाने का विचार ग्रहण किया गया था–

(क) बॉम्बे प्लान से

(ख) सोवियत खेमे के देशों के अनुभवों से

(ग) समाज के बारे में गाँधीवादी विचार से

(घ) किसान संगठनों की मांगों से

उत्तर– उपर्युक्त सभी

प्रश्न 4. निम्नलिखित का मेल करें–

(क) चरणसिंह	(1) औद्योगीकरण
(ख) पी.सी. महालनोबिस	(2) जोनिंग
(ग) बिहार का अकाल	(3) किसान
(घ) वर्गीज कूरियन	(4) सहकारी डेयरी

उत्तर–

(क) चरणसिंह	(3) किसान
(ख) पी.सी. महालनोबिस	(1) औद्योगीकरण
(ग) बिहार का अकाल	(2) जोनिंग
(घ) वर्गीज कूरियन	(4) सहकारी डेयरी

Youtube Channel : Siddhi Vinayak Sangaria

प्रश्न 5. आजादी के समय विकास के सवाल पर प्रमुख मतभेद क्या थे? क्या इन मतभेदों को सुलझा लिया गया?

उत्तर– **आजादी के समय विकास के सवाल पर मतभेद–**

आजादी के समय विकास के सवाल पर विभिन्न मतभेद थे। जैसे–

(1) आर्थिक संवृद्धि के साथ सामाजिक न्याय को सुनिश्चित करने के लिए सरकार कौन–सी भूमिका निभाये? इस सवाल पर मतभेद था।

(2) विकास के दो मॉडलों– उदारवादी–पूँजीवादी मॉडल और समाजवादी मॉडल में से किस मॉडल को अपनाया जाये? इस बात पर मतभेद था।

(3) कुछ लोग औद्योगीकरण को उचित रास्ता मानते थे तो कुछ की नजर में कृषि का विकास करना और ग्रामीण क्षेत्र की गरीबी को दूर करना सर्वाधिक जरूरी था।

(4) कुछ अर्थशास्त्री केन्द्रीय नियोजन के पक्ष में थे जबकि अन्य कुछ विकेन्द्रित नियोजन को विकास के लिए आवश्यक मानते थे।

मतभेदों को सुलझाना–

उपर्युक्त में से कुछ मतभेदों को सुलझा लिया गया है परन्तु कुछ को सुलझाना अभी भी शेष है, जैसे

(1) सभी में इस बात पर सहमति बनी कि देश के व्यापार उद्योगों और कृषि को क्रमशः व्यापारियों, उद्योगपतियों और किसानों के भरोसे पूर्णतः नहीं छोड़ा जा सकता है।

(2) लगभग सभी इस बात पर सहमत थे कि विकास का अर्थ आर्थिक संवृद्धि और सामाजिक–आर्थिक न्याय दोनों ही है।

(3) इस बात पर भी सहमति हो गई कि गरीबी मिटाने और सामाजिक–आर्थिक पुनर्वितरण के काम की जिम्मेदारी सरकार की होगी।

(4) विकास के लिए मिश्रित अर्थव्यवस्था को अपनाने पर सहमति बनी।

प्रश्न 6. पहली पंचवर्षीय योजना का किस चीज पर सबसे ज्यादा जोर था? दूसरी पंचवर्षीय योजना पहली से किन अर्थों में अलग थी?

उत्तर– पहली पंचवर्षीय योजना में देश में लोगों को गरीबी के जाल से निकालने का प्रयास किया गया और इस योजना में ज्यादा जोर कृषि क्षेत्र पर दिया गया। इसी योजना के अन्तर्गत बाँध और सिंचाई के क्षेत्र में निवेश किया गया। भाखड़ा–नांगल जैसी विशाल परियोजनाओं के लिए बड़ी धनराशि आवंटित की गई। इस योजना में भूमि सुधार पर जोर दिया गया और इसे देश के विकास की बुनियादी चीज माना गया।

दोनों में अन्तर–

(1) प्रथम पंचवर्षीय एवं द्वितीय पंचवर्षीय योजना में प्रमुख अन्तर यह था कि जहाँ प्रथम पंचवर्षीय योजना में कृषि क्षेत्र पर अधिक बल दिया गया, वहीं दूसरी योजना में भारी उद्योगों के विकास पर अधिक जोर दिया गया।

(2) पहली पंचवर्षीय योजना का मूलमंत्र थाकृ धीरज, जबकि दूसरी पंचवर्षीय योजना तेज संरचनात्मक परिवर्तन पर बल देती थी।

Youtube Channel : Siddhi Vinayak Sangaria

प्रश्न 7. हरित क्रान्ति क्या थी? हरित क्रान्ति के दो सकारात्मक और दो नकारात्मक परिणामों का उल्लेख करें।

उत्तर– **हरित क्रान्ति का अर्थ** – ''हरित क्रान्ति से अभिप्राय कृषिगत उत्पादन की तकनीक को सुधारने तथा कृषि उत्पादन में तीव्र वृद्धि करने से है।'' इसके तीन तत्व थे– (1) कृषि का निरन्तर विस्तार (2) दोहरी फसल लेना (3) अच्छे बीजों का प्रयोग। इस प्रकार हरित क्रांति का अर्थ है–सिंचित और असिंचित कृषि क्षेत्रों में अधिक उपज देने वाली किस्मों को आधुनिक कृषि पद्धति से उगाकर उत्पादन बढ़ाना।

हरित क्रान्ति के दो सकारात्मक परिणाम–

हरित क्रांति के निम्न सकारात्मक परिणाम निकले

(1) हरित क्रान्ति से खेतिहर पैदावार में सामान्य किस्म का इजाफा हुआ (ज्यादातर गेहूँ की पैदावार बढ़ी) और देश में खाद्यान्न की उपलब्धता में बढ़ोत्तरी हुई।

(2) हरित क्रांति के कारण कृषि में मँझोले दर्जे के किसानों यानी मध्यम श्रेणी के भू–स्वामित्व वाले किसानों का उभार हुआ।

हरित क्रान्ति के नकारात्मक परिणाम हरित क्रान्ति के दो नकारात्मक परिणाम निम्न हैं

(1) इस क्रान्ति से गरीब किसानों और भू–स्वामियों के बीच का अंतर बढ़ गया।

(2) इससे पंजाब, हरियाणा और पश्चिमी उत्तरप्रदेश जैसे इलाके कृषि की दृष्टि से समृद्ध हो गए जबकि बाकी इलाके खेती के मामले में पिछड़े रहे।

प्रश्न 8. ''नियोजन के शुरुआती दौर में 'कृषि बनाम उद्योग' का विवाद रहा।'' इस कथन को स्पष्ट कीजिए।

अथवा

दूसरी पंचवर्षीय योजना के दौरान औद्योगिक विकास बनाम कृषि विकास का विवाद चला था। इस विवाद में क्या–क्या तर्क दिए गए थे?

उत्तर– दूसरी पंचवर्षीय योजना के दौरान औद्योगिक विकास और कृषि विकास में किस क्षेत्र के विकास पर जोर दिया जाय, का विवाद चला। इस विवाद के सम्बन्ध में विभिन्न तर्क दिये गये। यथा–

(1) कृषि क्षेत्र का विकास करने वाले विद्वानों का यह तर्क था कि इससे देश आत्मनिर्भर बनेगा तथा किसानों की दशा में सुधार होगा, जबकि औद्योगिक विकास का समर्थन करने वालों का यह तर्क था कि औद्योगिक विकास से देश में रोजगार के अवसर बढ़ेगे तथा देश में बुनियादी सुविधाएँ बढ़ेगी।

(2) अनेक लोगों का मानना था कि दूसरी पंचवर्षीय योजना में कृषि के विकास की रणनीति का अभाव था और इस योजना के दौरान उद्योगों पर जोर देने के कारण खेती और ग्रामीण इलाकों को चोट पहुँचेगी। .

(3) कई अन्य लोगों का सोचना था कि औद्योगिक उत्पादन की वृद्धि दर को तेज किए बगैर गरीबी के मकड़जाल से मुक्ति नहीं मिल सकती। कृषि विकास हेतु तो अनेक कानून बनाये जा चुके हैं, लेकिन औद्योगिक विकास की दिशा में कोई विशेष प्रयास नहीं हुए हैं। हैं

Youtube Channel : Siddhi Vinayak Sangaria

प्रश्न 9. "अर्थव्यवस्था में राज्य की भूमिका पर जोर देकर भारतीय नीति–निर्माताओं ने गलती की। अगर शुरूआत से ही निजी क्षेत्र को खुली छूट दी जाती तो भारत का विकास कहीं ज्यादा बेहतर तरीके से होता।" इस विचार के पक्ष या विपक्ष में अपने तर्क दीजिए।

उत्तर– उपर्युक्त विचार के पक्ष व विपक्ष में निम्नलिखित तर्क दिये जा सकते हैं–

पक्ष में तर्क –

(1) भारत ने 1990 के दशक से ही नई आर्थिक नीति अपनायी है। तब से यह तेजी से उदारीकरण और वैश्वीकरण की ओर बढ़ रहा है। यदि यह नीति प्रारम्भ से ही अपना ली गई होती तो भारत का विकास अधिक बेहतर होता।

(2) अन्तर्राष्ट्रीय मुद्राकोष और विश्व बैंक जैसी बड़ी अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाएँ भी उन्हीं देशों को अधिक ऋण व निवेश के संसाधन प्रदान करती हैं जहाँ निजी क्षेत्र को खुली छूट दी जाती है। जिन बड़े कार्यों के लिए सरकार पूँजी. जुटाने में असमर्थ होती है उन कार्यों में अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाएँ, बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ और देशी बड़े–बड़े पूँजीपति लोग पूँजी लगा सकते हैं।

(3) अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रतियोगिता में भारत तभी ठहर सकता था जब निजी क्षेत्र को छूट दे दी गई होती।

विपक्ष में तर्क – निजी क्षेत्र के विपक्ष में निम्न तर्क दिये जा सकते हैं

(1) भारत में कृषिगत और औद्योगिक क्षेत्र का विस्तार सरकारी वर्ग की प्रभावशाली नीतियों व कार्यक्रमों से हुआ। यदि ऐसा नहीं होता तो भारत पिछड़ जाता।

(2) भारत में विकसित देशों की तुलना में जनसंख्या ज्यादा है। यहाँ बेरोजगारी है, गरीबी है। यदि पश्चिमी देशों की होड़ में भारत सरकारी हिस्से को अर्थव्यवस्था में कम कर दिया जाएगा तो बेरोजगारी बढ़ेगी, गरीबी फैलेगी, धन और पूँजी कुछ ही बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के हाथों में केन्द्रित हो जाएगी जिससे आर्थिक विषमता और बढ़ जाएगी।

(3) भारत कृषि प्रधान देश है। वह विकसित देशों के कृषि उत्पादन से मुकाबला नहीं कर सकता। कृषि क्षेत्र में सरकारी सहयोग राशि के बिना कृषि का विकास रुक जायेगा।

Class – 12th NCERT राजनीति विज्ञान के प्रत्येक अध्याय को अच्छे से समझने के लिए सिद्धि विनायक संगरिया यू–ट्यूब चैनल पर आप वीडियो देखें। इसके लिए आपको चैनल की प्ले–लिस्ट NCERT POL SCIENCE|2021-22|Class 12 (https://www.youtube.com/watch?v=T1_JmzbsaAM&list=PLIlq5TfwxGWF7iVqpMJgSuc6OVr8kERaU) में अध्यायवार सभी वीडियो एकसाथ मिलेंगे। आप भी पढ़ें और अपने साथियों को भी पढ़ने के लिए प्रेरित करें।

धन्यवाद

सिद्धि विनायक संगरिया टीम

Youtube Channel : Siddhi Vinayak Sangaria